Q) महाजनपदो के विशिष्ट लक्षणो का वर्णन करे।

i) महाजनपदो के विशिष्ट लक्षण: इन 16 जनपदो मे से कुछ गण-राज्य थे और कुछ राजतंत्र थे। वज्जि, कुरु, मल्ल सूरसेन आदि गणराज्य थे और मगध वत्स अवन्ति तथा कौशल राजतंत्र थे।

ii) गणराज्यो मे जनता के प्रतिनिधि शासन करते थे। और राजतंत्र मे वंशक्रमानुगत वंश के अनुसार राजा राज करते थे।

(iii) अधिकांश महाजनपदो मे राजतंत्र प्रणाली का प्रचलन था। राजा का पद पैतृक एवं सर्वोच्च था और सभी शक्तियां उसके हाथ मे केंद्रित थी। उसकी शक्तियां एवं अधिकार असीमित थे।

(iv) प्रत्येक जनपद की एक किलेबद्ध राजधानी होती थी। प्रत्येक किले पर तथा उनमे रहने वाले लोगो पर राजा का नियंत्रण होता था।

(v) महाजनपदो मे कुछ राजा अपनी शक्ति एवं संसाधनो के प्रदर्शन के लिए भी चारो ओर से विशाल और ऊँची दिवारो से घेर लेते थे तो कुछ राजा अपने राज्यो की रक्षा एवं वृद्धि

Scanned with CamScanner

व्यवस्था बनाए रखने के लिए विशाल सेनाओं का संगठन करते थे।

(vi) किलेबंद राजधानियों के रख-रखाव, सेना और नौकरशाही के खर्चों को पूरा करने के लिए धन की आवश्यकता थी। लगभग छठी शताब्दी ई०पू० से ब्राह्मणों ने संस्कृत में धर्मशास्त्र नामक ग्रंथों की रचना की। इन ग्रंथों से शासकों तथा अन्य लोगों के नियमों को निर्धारित किया।

(vii) महाजनपदों में समान्यतः शासकों के क्षत्रिय वर्ग से ही संबंधित होने की अपेक्षा की जाती थी। शासकों का प्रमुख कार्य किसानों, व्यापारियों एवं शिल्पकारों से कर एवं भेंट वसूलना था। परंतु निश्चयपूर्वक यह कहा नहीं जा सकता है कि वनवासियों एवं चरवाहों से कर के रूप में कुछ वसूल किया जाता था या नहीं। इन सभी करों में भूमि कर सर्वाधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि ज्यादातर लोग किसान थे।

Q. गुप्तकाल को भारत का स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है? अथवा गुप्तकाल को स्वर्णयुग कहे जाने के पीछे क्या-क्या कारण विद्यमान थे। उन कारणों का उल्लेख करें।

Ans. स्वर्ण अर्थात सोना एक ऐसी बहुमूल्य एवं सुंदर धातु है जो प्रत्येक व्यक्ति को पसंद होती है। अर्थात किसी युग का समाज संबंधत:, सुख एवं हर तरह के वैभव से संपन्न होने वाला युग स्वर्ण युग कहा जाता है।

स्वर्ण काल उस काल को कहते हैं जिस काल में उस देश की संस्कृति अपने ऊँचाई को छू लेती है, इतिहास में तो कई युग आते-जाते हैं परंतु उनमें जिस भी युग में मानव सबसे ज्यादा

सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक उन्नति करता है। उस युग को ही स्वर्ण युग की संज्ञा दी जाती है।

भारतीय इतिहास के परिपेक्ष में हम देखे तो गुप्त काल में ज्ञान-विज्ञान, कला, स्थापत्य एवं साहित्य आदि सभी क्षेत्रों में अत्यधिक उन्नति हुई। राजनीतिक दृष्टि से समुद्र गुप्त को स्वयं कला एवं साहित्य में रुचि थी चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) भी कई विद्वानों को आश्रय देता था। उसके दरबारी विद्वानों को नौरत्न कहकर पुकारा जाता था। जिसमें कालीदास, वराहमिहिर, वररुचि, शंकु वेताल भट्ट, घटकर्पर, धन्वन्तरी, क्षपणक एवं अमर सिंह थे।

कालीदास, भवभूति, भारवी, माघ, गुप्तकाल के प्रमुख कवि और नाटककार थे। कालीदास ने भी बहुत सारे संस्कृत ग्रंथों की रचना की जिसमें अभिज्ञान शाकुन्तलम, रघुवंश, मेघदूत, कुमारसंभव आदि आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त जैसे महान वैज्ञानिक गुप्तयुग की ही देन है। गुप्त काल में ही असंग वसुबंधु एवं सघरक्षित जैसे बौद्ध दार्शनिक हुए। चीनी यात्री फाह्यान बताता है कि गुप्त सम्राटों ने बौद्ध धर्म को संरक्षण दिया। दिल्ली का लौह स्तंभ एवं अजंता की गुफाओं की उत्कृष्ट चित्रकारी गुप्तकाल के ही देन है।

इस प्रकार सकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो गुप्तकाल भारत का स्वर्णयुग था। रोमिला थापर ने इस युग को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "क्लासिक युग वह युग है जिसमें साहित्य, वास्तुकला तथा ललित-कलाएं उत्कर्ष के ऐसे स्तर पर पहुंच जाए जहां कि आने वाले समय के लिए वे आदर्श बन सके।

Scanned with CamScanner

लेखकों की जीवनियाँ भी कहीं-कहीं उपलब्ध व्यक्तित्व का विश्लेषण करके भी इनके द्वारा विश्लेषण में मदद मिलती है।

पहलुओं पर विचार करके एक इतिहासकार यथार्थता को सामने ला सकता है। मौर्यकाल ध्य का इतिहास लिखने में हमें साहित्यिक थ अभिलेख भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। खों का विश्लेषण कर इतिहासकार इस काल जन करता है।

बौद्ध ग्रन्थ 'अगुत्तर निकाय' एवं जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' में हमें इन 16 महाजनपदों (क्षेत्रीय राज्यों) का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है। ये निम्नलिखित हैं—

(1) काशी	(2) कौशल	(3) अंग
(4) मगध	(5) वज्जि	(6) मल्ल
(7) चेदि	(8) वत्स	(9) कुरु
(10) पांचाल	(11) मत्स्य	(12) शूरसेन
(13) अश्मक	(14) अवन्ति	(15) गान्धार
(16) कम्बोज		

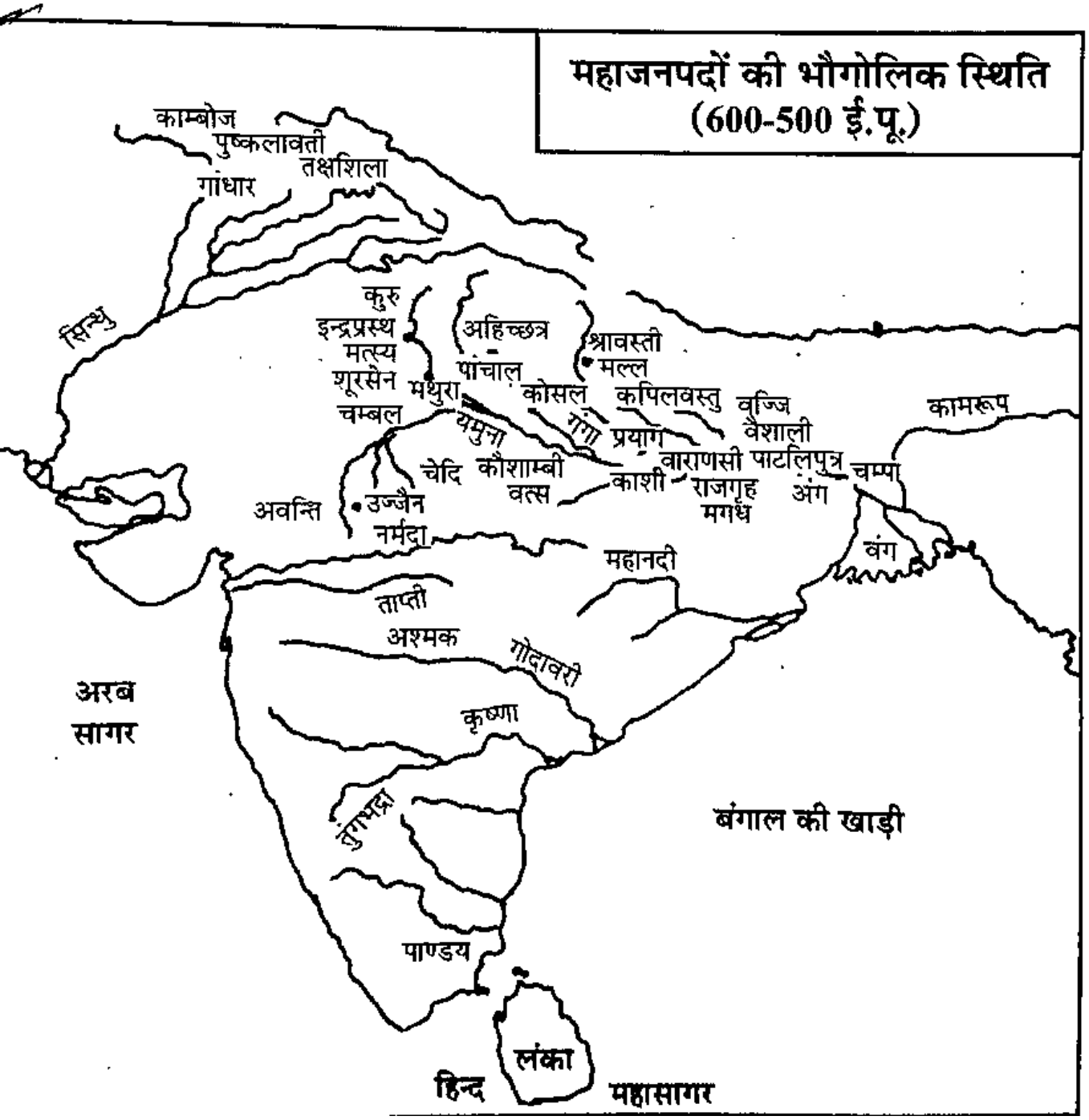

Scanned with CamScanner

अशोक के अभिलेख

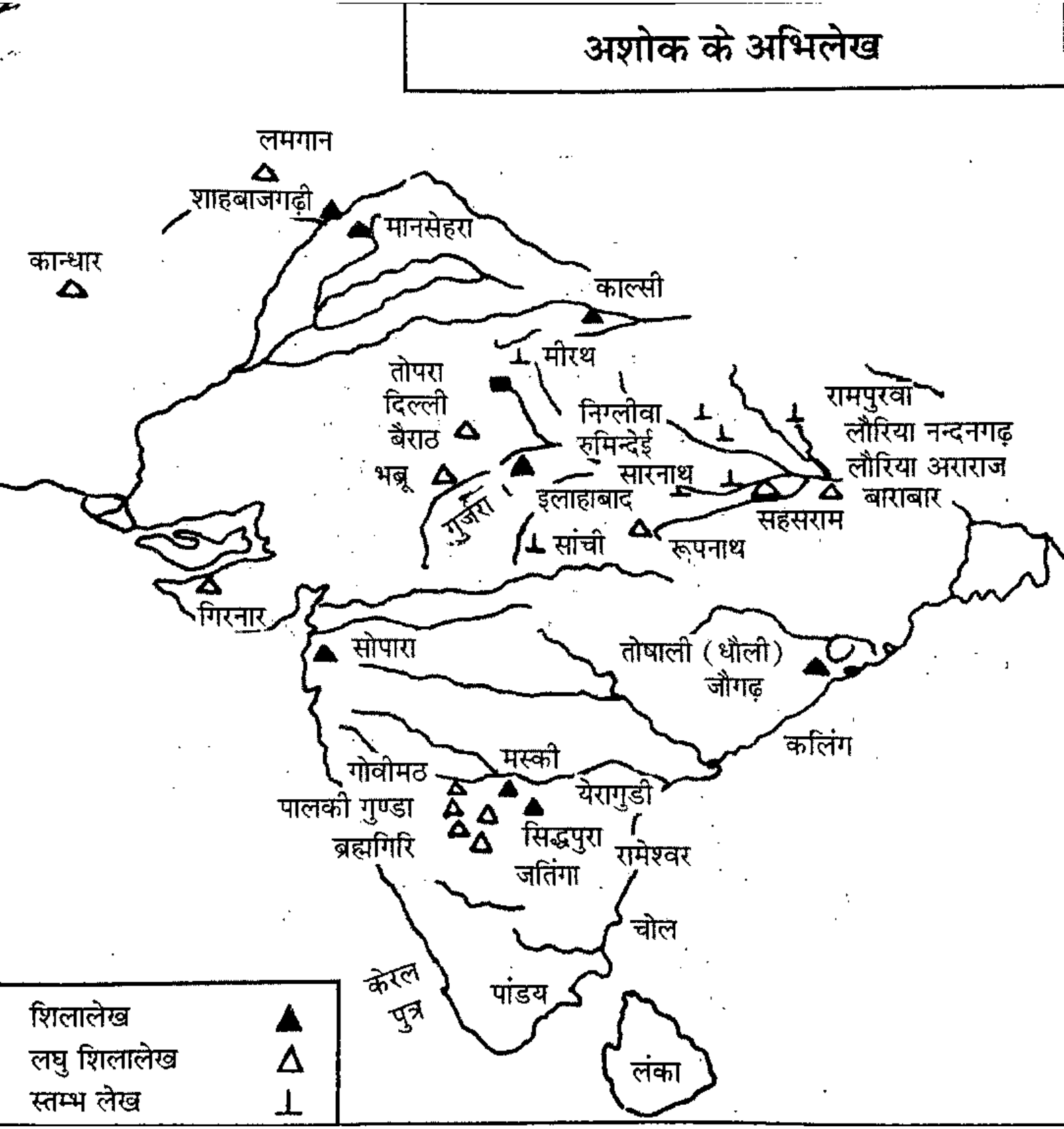

Scanned with CamScanner